ईरान से हिंदुस्तान तक की सिनेमा में गांधी

विशाल कुमार*
vjha99267@gmail.com

"सादा जीवनी उच्च विचार" महात्मा गांधी के सम्पूर्ण जीवन का मूल मंत्र रहा है। बीसवीं शताब्दी के पूरे युग को गांधी युग कहना गलत नहीं, क्योंकि इस दौर में पूरे विश्व की सरकार, संस्कृति, सभ्यता, मनुष्यता और मनुष्यता के विचारों में गांधी के विचारों का प्रभाव देख सकते हैं। तो ये सम्भव ही नहीं था कि सिनेमा इन विचारों से अछूता रह पता, हालांकि गांधी को सिनेमा अप्रिय था लेकिन सिनेमा वालों को गांधी अप्रिय नहीं थे। हमारे समाज में ये धारणा बनी हुए है कि जब भी कोई किसी विषय पर बात करेगा तो वह उस विषय के किसी विशेष व्यक्ति का जिक्र करेगा, नहीं तो किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जो इस क्षेत्र में काम कर चुका हो, लेकिन ये अवधारणा गांधी का नाम आते ही टूटने लगती है क्योंकि गांधी का सिनेमा के प्रति प्रत्यक्ष रूप से कोई योगदान नहीं था, लेकिन हां ये कभी नकारा नहीं जा सकता है कि गांधी का अप्रत्यक्ष रूप से सिनेमा पर प्रभाव नहीं था। उनका प्रभाव सिनेमा पर विचारों से, अहिंसा से, सत्यता से था और यही गांधी को गांधी बनता है। आचार्य नंदलाल बोस जो भारतीय कला परंपरा के विद्वानों में से एक है वो गांधी के विषय में लिखते हुए कहते हैं कि "गांधी चाहे उस अर्थ में कलाकार न हों जिस अर्थ में हम हैं, चाहे जो हो, मैं उन्हें कलाकार मानता हूं। उन्होंने अपना सारा जीवन अपने व्यक्तित्व के निर्माण में लगाया है और दूसरे को अपने उच्चादर्श पर चलने योग्य बनाया है। उनका उद्देश्य मिट्टी के मनुष्य को देवता बनाना है। मेरा विश्वास है कि उनका आदर्श संसार के कलाकारों को प्रेरणा प्रदान करना है। यह प्रेरणा मिली भी है और उन्होंने कलाकारों के दिल को अपने ढंग से आंदोलित भी किया है" आचार्य नंदलाल जी ने गागर में सागर भरने का काम इन पंक्तियों के माध्यम से किया है गांधी की सिनेमा दृष्टि समझने के लिए हमें तीन पहलुओं से देखने की ज़रूरत है।

1. गांधी का सिनेमा दृष्टिकोण
2. सिनेमा वालों का गांधी दृष्टिकोण – भारतीय दृष्टिकोण
3. ईरान की सिनेमा में गांधी

इन्हीं तीन बिंदुओं के माध्यम से हम गांधी की सिनेमा के प्रति संपूर्ण दृष्टि समझने की कोशिश करेंगे। महात्मा गांधी को तकनीक और उससे होने वाले दुष्परिणामों को लेकर चिंता थी और जो जायज भी थी, और इन्हीं दुष्परिणामों को देखते हुए गांधी ने सिनेमा को "सिनफुल टेक्नोलॉजी" कहा हैं। बात यह है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और उसके समाप्त होने के बाद की दिनों में लगभग सम्पूर्ण एशिया में सिनेमा कई मामलों में जरूरी साबित हुआ है। यहां की एशिया सिनेमा ने हॉलीवुड वालों के सामने एक नया दृष्टिकोण रखने का काम भी किया था। भारत भी उन्हीं में से एक था क्योंकि भारत में सिनेमा का इतिहास 1913 के आस पास शुरू होता हुआ दिखता है। एक बात और गौर करने की है कि सिनेमा की शुरुआत आजादी के पहले हो चुकी थी।

* **हैदराबाद विश्वविद्यालय**

और जिस प्रकार से गुलाम हिंदुस्तान में साहित्य, सिनेमा, कला और संगीत पर लगातार प्रतिबंध लगाए जा रहे थे। उससे गांधी और पूरा हिंदुस्तान पीड़ित था। वो दिन याद करने लायक है जब असहयोग आंदोलन के समय पूरे देश के जेल भरे जा रहे थे। ठीक उसी समय भारत में एक बड़ी संख्या में साहित्य, सिनेमा और कला पर प्रतिबंध लगाए जा रहे थे।

गांधी का सिनेमा दृष्टिकोण :

अब हम गांधी की अगर बात करें तो पाएंगे कि गांधी का सिनेमा के साथ कोई जैविक रिश्ता नहीं था लेकिन गांधी इससे अछूते भी नहीं थे क्योंकि गांधी के समय सिनेमा अपने पैर पर खड़े हो रहा था। गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से 9 जनवरी 1915 को लौट रहे थे तो उन्होंने कहा था कि “अब मैं भोगभूमि से कर्मभूमि की ओर लौट रहा हूं।” लौटने के बाद गांधी ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। और देश के उस हर हिस्से में वो गए जहां उन्हें जाना ज़रूरी लगा और वो धीरे-धीरे पूरे भारत में एक जनप्रतिनिधि के रूप में लोग उन्हें जानने लगे और अब मौका था पूरे विश्व को बताने का यह समय था द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का जिसमे भारत की तरफ से महात्मा गांधी, सरोजिनी नायडू, ए. रंगास्वामी अयंगर, मदन मोहन मालवीय, और कई अन्य लोग भाग ले रहे थे। और इसी समय एक मुलाकात होती है जिसपे पूरे विश्व की नजर पड़ती है। क्योंकि यह मुलाकात थी गांधी और विश्व प्रसिद्ध अभिनेता चार्ली चैपलिन की हालांकि जब चार्ली चैपलिन ने गांधी से मिलने की इच्छा जाहिर की, तब तक महात्मा गांधी उनको जानते तक नहीं थे। लेकिन जब गांधी को पता चलता की चार्ली चैपलिन अभिनेता के साथ-साथ मजदूरों, वंचितों और शोषितों के लिए भी लगातार काम कर रहने है तो गांधी उनसे मिलने को उत्सुक हुए और दोनों के मुलाकात के बाद चार्ली चैपलिन ने कहा था कि “Gandhi is a tremendous personality, tremendous! He is a great international figure: Moreover he is a great dramatic figure” गांधी के विषय में चार्ली चैपलिन ने जो नाटकीय तत्वों की बात की है वही सिनेमा का एक मूल अंग भी है। द्वितीय गोलमेज सम्मलेन से लौटने के बाद गांधी न सिर्फ भारतीय राजनीति में खुद को समर्पित कर दिए बल्कि भारत की आजादी तक भारत का प्रतिनिधित्व भी किया। गांधी मनुष्य के नहीं, सम्पूर्ण मनुष्यता के लिए समता का दर्शन देना चाहते थे। अगर गांधी को जानना है, समझना है, तो सिनेमा को गांधी के नजरिए से देखना चाहिए न कि गांधी को सिनेमा के नजरिए से। गांधी की सिनेमा दृष्टि देखने के लिए हमें बहुत धैर्य और ठहराव से उनके जीवन दर्शन को देखना पड़ेगा क्योंकि अगर हम यहां जल्दबाजी करेंगे तो हमारे हाथ कुछ नहीं लगेगा। क्योंकि साहित्य, संगीत और सिनेमा व्यक्ति निर्माण के लिए उसी प्रकार जरूरी है जिस प्रकार से जीवित रहने के लिए जल, जंगल और जमीन।

सिनेमा वालों का गांधी दृष्टिकोण: भारतीय सिनेमा

गांधी को भले ही सिनेमा पसंद न हो लेकिन सिनेमा वालों ने गांधी का पीछा कभी नहीं छोड़ा, सिनेमा की अपनी एक गति होती है और वो गति हमेशा गतिमान होती है और उसकी गति से कभी कोई नहीं बच पाया है चाहे वो भगवान राम, कृष्ण, ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, महात्मा गांधी और भीम राव अंबेडकर ही क्यों न हो सिनेमा की गति से कोई भी बच नहीं पाया है। गांधी बचपन से ही बायोस्कॉप का प्रयोग तो कर रहे थे। लेकिन उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में एक मात्र हिन्दी फिल्म देखी थी। जिसका नाम था “ रामराज्य” जिसका निर्देशन विजय भट्ट ने किया था। और ये फ़िल्म भी गांधी देखना नहीं चाहते थे वे “ रामराज्य” फ़िल्म के कुछ चुनिंदा सीन को चालीस मिनट में देखना चाहते थे लेकिन उन्होंने सम्पूर्ण फ़िल्म देखी। महात्मा गांधी के

मृत्यु के बाद भारतीय और विश्व सिनेमा ने उनके जीवन और दर्शन को लेकर कई फिल्मों का निर्माण किया गया है, जो गांधी के विचारों से ही प्रभावित था। चार्ली चैपलिन ने गांधी से मुलाकात के पांच साल बाद "द मॉडर्न टाइम्स" नामक एक फिल्म बनाई जो गांधी के विचारों से प्रभावित होकर मशीनीकरण से आई जो दिक्कतें थी उसे दर्शाता है। 1963 में एक इतिहासकार स्टैनले वालपोर्ट की पुस्तक को आधार बनाते हुए " नाइन आवर्स टू राम "नामक फिल्म बनी। स्टैनले वालपोर्ट ने बाद में "गांधीज पैसन" नामक एक पुस्तक भी लिखी जिसमें वे न केवल मार्टिन ग्रीन द्वारा आरोपित आक्षेपों की नकल किए हैं, अपितु फ्रायडियन अवदमन से मुक्त भी नहीं हो पाये हैं। रिचर्ड एंटनबरो दवारा निर्मित गांधी और बेनगल की "दि मेकिंग ऑफ गांधी" बेहतरीन फ़िल्मे हैं, जो गांधी को एक हद तक प्रस्तुत करने में सफल रही हैं। पिछले कुछ दशकों में कई फिल्में गांधी पर बनी हैं। ऐसा नहीं है कि महात्मा गांधी ने मात्र हिंदी और भारतीय सिनेमा को ही प्रभावित किया। उन्होंने पूरे विश्व के सिनेमा को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए मार्टिन लूथर किंग के कालखंड में हॉलीवुड में जो फिल्में बनी, वो भी महात्मा गांधी के विचारों से ही प्रभावित रहीं। हिरोशिमा और नागासाकी की घटना के बाद पूरे विश्व के फिल्मकारों में युद्ध के विपरीत जो मनःस्थिति बनी, उसको भी गांधी ने ही प्रभावित किया। कुछ फ़िल्में तो आठ बार अवॉर्ड जीत चुकी है जैसे कि ये फ़िल्म, जिसका नाम है " गांधी " जिसका निर्देश रिचर्ड एंटनबरो द्वारा किया गया है और इसमें बेन किंग्सले गाँधी की भूमिका में है। इस फ़िल्म के लिए दोनों को अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस फिल्म ने सारे पुरस्कार जीते, जैसे कि सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ नया कथानक, सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म संपादन और अन्य पुरस्कार इस फिल्म ने अपने नाम की यह फिल्म 1982 में बन के तैयार हो गई थी। इसके अलावा भी कई और फ़िल्में बनीं जो इस प्रकार है -

- साल 1963 में आई फ़िल्म *'नाइन ऑवर्स टू रामा'* महात्मा गांधी की हत्या से काल्पनिक 9 घंटे पहले की कहानी पर आधारित है।
- साल 2008 में एनआरएन गौड़ा ने कन्नड भाषा में *'नानु गाँधी'* फ़िल्म बनाई थी।
- साल 2009 में अमित राय ने हिन्दी में *'रोड टू संगम'* फ़िल्म बनाई थी।
- साल 2016 में सरोज मिश्र ने हिन्दी में *'गांधीगीरी'* फ़िल्म बनाई थी।
- साल 2018 में नईम सिद्दिकी ने *'हमने गांधी को मार दिया'* फ़िल्म बनाई थी।

भारत में महात्मा गांधी के जीवन के ऊपर दो और महत्वपूर्ण फिल्में बनी। 1996 में श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित " *द मेकिंग ऑफ महात्मा*" और 2007 में फिरोज अब्बास खान द्वारा निर्देशित " *गांधी माइ फादर*"। ये फिल्में पूरी तरह से महात्मा गांधी के जीवन और उनके विचारों पर आधारित हैं, लेकिन भारत में ऐसी कई अन्य फिल्में भी बनी जो गांधी पर आधारित तो नहीं हैं, परंतु महात्मा गांधी की उसमें एक पात्र की तरह मौजूद है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण फिल्में हैं - वर्ष 1993 में बनी केतन मेहता द्वारा निर्देशित "*सरदार*", वर्ष 2000 में बनी जब्बार पटेल द्वारा निर्देशित *"डॉ बाबासाहेब अंबेडकर*" वर्ष 2002 में बनी राजकुमार संतोषी द्वारा निर्देशित " *द लेजेंड ऑफ भगत सिंह*" वर्ष 2005 में बनी श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित "*नेताजी सुभाष चंद्र बोसः अ फॉरगॉटन हीरो*"।

ईरान की सिनेमा में गांधी

ईरान जैसे देशों में भी महात्मा गांधी के ऊपर बनी भारतीय फ़िल्में और आजादी के लिए किए गए उनके आंदोलनों को ईरानी टेलीविज़न पर दिखाया जाता रहा है। सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह पर उनके विचारों

को ईरानी फिल्मों में संवाद के माध्यम से दर्शकों के बीच पहुंचाया जाता रहा है। विचारों को लेकर कई फिल्मों का निर्माण हुआ। ईरान में गांधी के विचारों को लेकर दो महत्वपूर्ण फ़िल्में बनी है। जिनका जिक्र करना जरूरी है। जिसका नाम कुछ इस प्रकार है:-

1. *नारगेसी* 2. *द चिल्ड्रेन ऑफ हेवन*

नारगेसी :

ईरान में बनी एक ऐसी फिल्म है। जो गांधी के विचारों और दर्शनों को दर्शाता हुआ आगे बढ़ता है। जो गांधी के शांति, अहिंसा और सत्याग्रह को लेकर चलता है, इस फिल्म का निर्देशन 'पायम असकंदरी' ने किया है। जो कहते हैं कि "डाउन सिंड्रोम से पीड़ित लोग देवदूत होते हैं और उनके जीवन के बारे में अनेक कहानियां हैं, जिन्हें सुना जाना चाहिए।" यह फिल्म डाउन सिंड्रोम से पीड़ित एक व्यक्ति और उसके जीवन में इसके कारण पैदा होने वाली समस्याएं और परिणामों के बारे में है। "डाउन सिंड्रोम" एक ऐसी बीमारी है, जो बच्चों के मस्तिष्क और उसके बौद्धिक विकास में रुकावट पैदा करती है। इस फिल्म को भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के 53वें संस्करण में आईसीएफटी यूनेस्को गांधी पदक दिया गया है। और ये पदक इसे इस लिए दिया गया है क्योंकि ये फिल्म गांधी के विचारों से उत्प्रोत करता है, और इसके माध्यम से इस फिल्म के निर्देशक ईरान की जनता को एक सकारात्मक संदेश देना चाहते हैं, क्योंकि इस पुरस्कार का उद्देश्य ही यही है कि जो भी फिल्म शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देती है। उसे ये पुरस्कृत करेगी।

द चिल्ड्रेन ऑफ हेवन **:**

यह फिल्म 1997 में ईरान के सिनेमा घरों में लगी थी। यह फ़िल्म ईरानी परिवारों के बीच एक खोई हुई, एक जोड़ी जूतों को लेकर है और इसमें पारिवारिक संवादों के माध्यम से पूरे समाज को एक सकारात्मक संदेश देने का काम करती है। जो कि एक भाई बहन के संवादों के आस पास घूमती है। इन्हीं बच्चों के माध्यम से इस फिल्म के निर्देशक "माजिद मजीदी" अपनी संवेदना, सरलीकरण, मानवीय मूल्य, प्रेम, अहिंसा आदि विचारों को ईरानी जन लोक तक पहुंचने का काम करते हैं, और यही काम गांधी भी किया करते थे। गांधी अनजाने में ही सिनेमा वालों को एक ऐसा विचार दे चले जिसका, उनके मृत्यु के बाद आज तक सिनेमा वाले उपयोग करते रहते हैं।

निष्कर्ष :

आज इस डिजिटल व चमचमाती आधुनिकता के दौर में अब फिर वह समय आ गया है, जब भारतीय सिनेमा गाँधी के विचारों, चिंतनों और दर्शनों को पुनः जीवित रखने की आवश्यकता मालूम होती है क्योंकि अब जिस तरह की फिल्में बन रही है। उसमें एक अरुचि सी पैदा हो रही है क्योंकि अगर हम दो तीन दशक पहले की सिनेमा को देखो तो हम पाते हैं कि उन फिल्मों को देख कर आम दर्शक न सिर्फ मनोरंजन करता है बल्कि उससे उसके मानस में एक चिंतन परम्परा भी विकसित होती है। और सिनेमा की उत्पति भी इसी लिए की गई थी कि उससे उस वर्ग को फायदा होगा जो पढ़ने-लिखने में असमर्थ हैं। वह दृश्य और श्रव्य के माध्यम से अपनी चेतना में वृद्धि करेगा, लेकिन पिछले एक दशक की हिंदी सिनेमा को देखकर नहीं लगता

है कि उसमें आम जन को व्यसन के अलावा और किसी प्रकार का शिक्षा दे रहा है करीब पचास वर्ष पहले रामवृक्ष बेनीपुरी ने कहा था कि "सिनेमा आधुनिक विज्ञान का यह वरदान है, जो सस्ता मनोरंजन देता है। दिन-भर की दौड़-धूप, मेहनत-मशक्कत से परेशान इंसान शाम को दिलबस्तगी का कोई सामान खोजता है। गरीब देश है। उसे ऐसा ही मनोरंजन चाहिए, जो कम से कम पैसे में प्राप्त हो सके, सब जगह प्राप्त हो सके और जिसके अपनाने में अंगुली भी नहीं उठाई जाए। सिनेमा इन सभी शर्तों को पूरा करता है। इसीलिए यह इतना जनप्रिय है" लेकिन गरीब का मनोरंज अब अश्लीलता तक पहुंचा गया है, जो कि एक खतरनाक रूप धारण करते जा रहा है और इसके पीछे का कारण सिनेमा में गांधी के मूल्यों व विचारों का न होना ही है क्योंकि गांधी अपने आप में एक आदर्श, स्वदेशी, स्वावलंबी और आत्मनिर्भर समाज बनाना है, न कि कमज़ोर और सुषुप्त समाज बनाना। हम जानते हैं कि गांधी निरंतर विकास का नाम है, सिनेमा से भी हमें उसी प्रकार की उम्मीद थी कि जो हमारे समाज को निरन्तर उच्च प्रगति की ओर अग्रसर करता हुआ। एक मशाल की तरह समाज को अपने पथ पर ले जाता लेकिन आज के समय में सिनेमा एक बंद कमरे की चीज बन कर रह गई है जो सिर्फ अकेले में देखी जा सकती है हालांकि ये पूर्ण सत्य नहीं है क्योंकि समाज में आज भी ऐसे कोई फ़िल्में हैं जो निरंतर एक सकारात्मक और उद्देश्य पूर्ण संदेश देने में सफल हो रही है।

संदर्भ :-

1. राय, मनोज कुमार. (2022). कला और सिनेमा. *गांधी की उपस्थिति : विविध वितान*. मुम्बई : प्रलेक प्रकाशन.

2. सुरेश, के. जी. (2022). गांधी का सिनेमा पर प्रभाव. *गांधी की उपस्थितिः विविध वितान*. मुम्बई : प्रलेक प्रकाशन.

3. मंजुल, यशर्थ. (2022). गांधी और सिनेमा. *गांधी की उपस्थिति : विविध वितान*. मुम्बई : प्रलेक प्रकाशन.

4. शुक्ल, प्रो. रजनीश कुमार. (2022). भारतीय सिनेमा पर गांधी का प्रभाव. *गांधी की उपस्थिति : विविध वितान*. मुम्बई : प्रलेक प्रकाशन.

5. सिनेमा की उपेक्षा नहीं कर सकते : रामवृक्ष बेनीपुरी

6. https://www.amarujala.com/columns/blog/gandhi-jayanti-speci al-mahatma-gandhi-s-influence-on-cinema

7. https://pib.gov.in/Press ReleasePage.aspx?PRID=1879647